डॉ.र.ग.देसाई
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
श्री.म.ग.कन्या महाविद्यालय,
सांगली.

IIII प्रमाणपत्र IIII

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.शहिदा हयातचाँद जमादार ने मेरे निर्देशन में "श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द के 'क्रांतिवीर तात्या टोपे' उपन्यास का अनुशीलन" लघु शोध प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है । यह कार्य पूर्व योजना नुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध छात्रा ने मेरे सुझाओं का पूर्णतः पालन किया है । जो तथ्य लघु शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ ।

सांगली ।
तिथि : 29-6-1996.

शोध निर्देशक

डॉ.र.ग.देसाई

प्रा.डॉ.पी.एस्.पाटील.
एम.ए.पीएच.डी.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

////// प्रमाणपत्र //////

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु – शोध – प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर

दिनांक : 29-6-1996.

डॉ.पी.एस्.पाटील
अध्यक्ष
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

प्रख्यापन

"श्री जगन्नथप्रसाद मिलिन्द के 'क्रांतिवीर तात्या टोपे' उपन्यास का अनुशीलन" लघु शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम्.फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

SHJamadar

कोल्हापुर

तिथि : 29-6-1996.

(कु.शहिदा हयातचाँद जमादार)

शोध-छात्रा

....

- प्राक्कथन -

[प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य]

श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द एक श्रेष्ठ उपन्यासकार, नाटककार, कवि, कहानिकार, निबन्धकार, पत्रकार माने जाते हैं। उन्होंनें हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं को अपनी लेखनीसे समृध्द किया है। उनके साहित्य में समाज जीवन का सशक्त व्यापक चित्र उभरकर आया है। उन्होने अपने साहित्यिक रचनाओं में समाज के लिए उपयुक्त संदेश एवं समाज हित की बातों को दिया है। अत: मेरे मन में उनके प्रति सम्मान एवं रूचि की भावना निर्माण हो गई है। मैंने उनकी कृतियों को ध्यानपूर्वक पढने का प्रयत्न किया तब "क्रांतिवीर तात्या टोपे" उपन्यास के नायक तात्या टोपे ने मुझे काफी प्रभावित किया। मैं तात्या के संपूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित हो गई और मैंने तात्या के जीवन को नई दृष्टी से देखना शुरू किया। वैसे तो ऐतिहासिक उपन्यास मेरे रूचि का विषय रहा है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, मृगनयनी, बाजीराव मस्तानी, फौलाद का आदमी आदि हिन्दी के तथा स्वामी, मंत्रावेगळा श्रीमान योगी, शाहेनशाहा आदि मराठी के उपन्यासों को पढने का कारण भी मेरी रूचि रही है।

मुझे एम.फील. की परिक्षा के लिए विशेष साहित्य विधाके रूप में मेरी प्रिय विधा "उपन्यास" रखने की अनुमति मिली। तब मैंने दुबारा "क्रांतिवीर तात्या टोपे" उपन्यास पढा। इसे पढते समय उसके कथानक की विविधता और यथार्थ चित्रण, नायक की स्वाधीनता की कोशिश आदि के कारण मेरे मन में सम्मान कुतूहल और जिज्ञासा निर्माण हुई। इसलिए मैंने लघु-शोध-प्रबन्ध के लिए "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास का अनुशीलन"इस विषय का चयन किया। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के रूप में मेरा वह संकल्प साकार हुआ है।

"क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास के अनुसंधान के प्रारम्भ में मेरे मन में कुछ प्रश्न निर्माण हुए थे वे इस प्रकार हैं -

१] "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" में ऐतिहासिकता का चित्रण किस तरह हुआ है ?

२] "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास के द्वारा लेखक कौन सी बात स्पष्ट करना चाहते हैं ?

३] ऐतिहासिक उपन्यास होने का कारण उपन्यास के अंतर्गत राष्ट्रीयता का चित्रण किस प्रकार हुआ है ?

४] स्वाधीनता संग्राम में नारी का योगदान किस प्रकार का रहा है ?

५] उपन्यास के नायक तात्या टोपे का चित्रण करने में लेखक ~~ह~~ सफल हो गए हैं या नहीं ?

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैं ने अपने लघु-शोध-प्रबन्ध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय :- "श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय आवश्यक होता है। प्रस्तुत अध्याय में मिलिन्द जी के जन्म और व्यक्तित्व का विवेचन किया है। प्रस्तुत अध्याय में व्यक्तित्व के साथ-साथ कृतित्व का विवेचन है। मिलिन्द जी को प्राप्त सम्मान पुरस्कार आदि का संक्षिप्त विवेचन दिया है।

मिलिन्द जी के जीवन परिचय के अंतर्गत उनका जन्म तथा बचपन, खान-पान, शिक्षा-दीक्षा, उनका परिवार, उनके जीवन के सभी अच्छे-बुरे पहलुओंका विवेचन कर प्रेरणा एवं प्रभाव आदि का विवेचन किया है।

कृतित्व के अंतर्गत :- काव्यकृति, खण्डकाव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध और संस्मरण आदि का विवेचन संक्षेप में दिया है।

द्वितीय अध्याय :- "क्रांतिवीर तात्या टोपे" उपन्यास की तत्वों के आधारपर समीक्षा है। इसमें उपन्यास के तत्वों :- कथावस्तु, पात्र या चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल तथा वातावरण, भाषाशैली, शीर्षक, उद्देश्य के आधार पर "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास का अनुशीलन किया गया है।

तृतीय अध्याय :- "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास में ऐतिहासिकता है। इस अध्याय के अंतर्गत उपन्यास का लाभ, परिभाषा और विकास यात्रा को बताते हुए उपन्यास का वर्गीकरण किया है। वर्गीकरण के अंतर्गत ऐतिहासिक उपन्यास को स्पष्ट किया है। इतिहास और उपन्यास में अंतर, इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास की विशेषताएँ तथा परिभाषाएँ दी है। युगीन पृष्ठभूमि में क्रांति के कारणों का विवेचन दिया है। "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास में ऐतिहासिकता का अध्ययन प्रस्तुत अध्याय का प्रमुख बिंदु है। ऐतिहासिकता के अंतर्गत विषयवस्तु का आधार इतिहास, इतिहास और वर्तमान का समन्वय, यथार्थ और कल्पना, ऐतिहासिक पात्र, घटना, तिथियाँ, घटना स्थल आदि के आधारपर "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" का अनुशीलन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय :- चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत राष्ट्रीयता का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में प्रथम "राष्ट्र" शब्द की व्युत्पत्ति तथा "राष्ट्रीयता" की विविध विद्वानों द्वारा की गई परिभाषाओं को संकलित करते हुए सूची बनाकर "क्रान्तिवीर तात्या टोपे" उपन्यास का अनुशीलन किया है। राष्ट्रीयता के प्रमुख मानदण्ड - स्वदेश गौरव एवं राष्ट्रभक्ति, अतीत का गौरवगान, नवजागरण का उद्‌बोधन, उद्‌बोधन का आवाहन, देश के स्वर्णिम भविष्य की कामना, विदेशी शासन के प्रति विद्रोह, बलिदान की भावना, इतिहास प्रेम, संस्कृति प्रेम, स्वतंत्रता संघर्ष, जातीय और भौगोलिक एकता, मानवतावाद आदि के आधारपर क्रान्तिवीर तात्या टोपे उपन्यास में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता का अनुशीलन किया गया है।

पंचम् अध्याय :- उपसंहार नामक पंचम् अध्याय के अंतर्गत पूर्व विवेचित अध्यायों की सारी बातें संक्षेप में दी गई है।

प्रबन्ध के अन्त में संदर्भ ग्रंथ-सूची दी गई है।

ऋ ण - नि र्दे श

प्रस्तुत लघु - शोध प्रबन्ध को सम्पन्न बनाने में मुझे जिन विव्दानों का मार्गदर्शन मिला उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना दायित्व समझती हूँ। यह लघु - शोध - प्रबन्ध पूर्ण करने में मेरे गुरुवर्य प्रा. डॉ. आर. जी. देसाईजी ने मेरे लेखन त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया। उनकी धर्मपत्नी सौ. विमल आर. देसाईजी ने भी मेरे साथ आत्मीयता का भाव प्रदर्शित करके मुझे लेखन कार्य में प्रोत्साहित किया। मैं उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगी।

इस लघु - शोध - प्रबन्ध को पूरा करते वक्त मुझे शिवाजी विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय डॉ. पी. एस. पाटीलजी, और डॉ. अर्जुन चव्हाणजी से प्रेरणा मिली। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिनके सहकार्य के फलस्वरूप मैं यह कार्य पूरा कर सकी।

इस कार्य को सम्पन्न बनाने के लिए डॉ. म्हैमूदअली शेख सर [शाहू इन्स्टिटयुट कोल्हापुर], तथा प्रा. वाय. एन. पाटील सर [जयसिंगपूर कॉलेज] इन्होंने मुझे प्रेरणा दी इसलिए मैं इनकी शुक्रगुजार हूँ।

अपने जीवन का हर कार्य मुझे मेरे माता-पिता के बिना अधूरा महसूस होता है। मेरा यह कार्य भी माता-पिता की दुवाओं से सम्पन्न हुआ है। मेरे भाई-बहन, चाचा-चाची तथा जमादार परिवार का मुझे इस कार्य में हमेशा सहयोग मिलता रहा, उन सभी को मैं एहसानमन्द एवं शुक्रगुजार हूँ।

मेरे अनेक मित्रों ने मुझे इस कार्य में मदद की उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबन्ध का टंकलेखन जयसिंगपुर के श्री. विजयकुमार चौगुले [प्रशांत टाईपरायटींग इन्स्टिटयुट] ने उत्तम और बडी तत्परतासे कर दिया इसलिए मैं उनकी आभारी हूँ।

कोल्हापुर
तिथि २९/६/१९९६

SHJamadar
शोध छात्र
[कु. शहिदा हयातचाँद जमादार]